भारत में संस्कृत भाषा की राज्यवार स्थिति का सर्वेक्षणात्मक अध्ययन

लता पाण्डे*
रमेश कुमार**

अपने अतीत की समझ व्यापक एवं परिष्कृत करने के लिए संस्कृत भाषा के महत्त्व से इंकार नहीं किया जा सकता है। यह लगभग सभी देशीय भाषाओं की जननी है। देश के विभिन्न राज्यों में इस भाषा की स्थितियों का अध्ययन सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष यहाँ दिए जा रहे हैं।

संस्कृत शब्द की निष्पत्ति 'सम्' (उपसर्गपूर्वक) 'कृ' धातु से 'क्त' प्रत्यय होकर हुई है। जिसका मौलिक अर्थ 'संस्कारित भाषा' है अर्थात् संस्कृत के अध्ययन तथा उसके द्वारा निर्दिष्ट मार्गों के अनुसरण से व्यक्ति स्वयं के आचरण को सुसंस्कृत कर पाता है।

निर्विवाद रूप से 'वेद' को संसार का प्राचीनतम ग्रंथ तथा भारतीय सनातन संस्कृति को प्राचीनतम संस्कृति माना जाता है। इस आदिकालीन सभ्यता को जानने हेतु संस्कृत भाषा की आवश्यकता है।

संस्कृत के महत्त्व को समझते हुए कुछ विद्वानों ने कहा है– 'संस्कृते संस्कृतिर्निहितम्' (मुसलगाँवकर, 1990, पृ.–12) अर्थात् भारतीय सनातन संस्कृति संस्कृत भाषा में ही निहित है। 'संस्कृत भारतीय विरासत एवं सभ्यता की प्रतीक है'। (पाण्डेय, 2003, पृ.–46)।

किसी भी भाषा का महत्त्व उसके पठन-पाठन की उपयोगिता पर ही निर्भर करता है। भाषा समाज, राष्ट्र एवं मानवीय मूल्यों की झलक प्रस्तुत करने में समर्थ होती है। संस्कृत भाषा का संपूर्ण वाङ्मय भारतीय संस्कृति एवं

* *एसोसिएट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली।

** *असिस्टेंट प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली।

मानवीय मूल्यों की प्रतिमूर्ति है। इसी भाषा को यह गौरव प्राप्त है जिसमें आध्यात्मिक तत्वों, दर्शन, व्याकरण, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, वैद्यक साहित्य, कला तथा अन्य विविध विषयों का विवेचन किया गया है।

अध्ययन की आवश्यकता

संस्कृत की प्राचीनता, महत्ता तथा उपयोगिता से परिचित होने के बावजूद भी आज संस्कृत की लोकप्रियता में निरंतर ह्रास होता जा रहा है। वर्तमान समय में जहाँ संस्कृत का अध्ययन-अध्यापन होता है वहाँ भी यह ज्ञानार्जन का माध्यम न होकर मात्र जीवनयापन हेतु प्रमाण-पत्र प्राप्ति का माध्यम रह गई है। वर्तमान समय में भारत के विद्यालयों में संस्कृत का अध्ययन दो प्रकार से होता है–

- वैकल्पिक विषय के रूप में
- मुख्य विषय के रूप में

जहाँ संस्कृत को एक वैकल्पिक विषय के रूप में शिक्षण प्रदान किया जाता है, उसे हम 'वर्तमान शिक्षण प्रणाली' के रूप में जानते हैं। इस प्रणाली के अंर्तगत उच्चतर प्राथमिक तथा माध्यमिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम में संस्कृत को वैकल्पिक स्थान प्राप्त है। दूसरी ओर जहाँ स्कूली शिक्षा में संस्कृत को ही माध्यम के रूप में शिक्षण के लिए प्रयुक्त किया जाता है उसे 'परंपरागत शिक्षण प्रणाली' कहते हैं। यह शिक्षण प्रणाली प्रथमा से प्रारंभ होकर उत्तर मध्यमा तक विद्यालयों में चलती है।

परंपरागत संस्कृत शिक्षा की व्यवस्था आंशिक रूप से अद्यावधि प्रचलित है जो आधुनिक संस्कृत शिक्षा-व्यवस्था से नितांत भिन्न कोटि की है। संस्कृत शिक्षा संबंधी ऐतिहासिक सर्वेक्षणों और आधिकारिक उल्लेखों तथा विवरणों के आधार पर उक्त शिक्षा व्यवस्था अधोलिखित रूप में प्रचलित थी।

प्राचीन काल में शिक्षण कार्य का प्रारंभ प्रायः शिक्षासत्र उपक्रम संस्कार से होता था। जो प्रायः ''श्रावण मास'' में किया जाता था और 'छंदसाम् उत्सर्जनम्' से पौष की पूर्णिमा को समाप्त होता था। इस प्रकार शिक्षा की अवधि लगभग 6 महीने की होती थी। आगे चलकर जैसे-जैसे पाठ्यक्रम में सम्मिलित विषयों-व्याकरण, ज्योतिष, दर्शन, धर्मशास्त्र आदि का विस्तार होता गया यह सत्रावधि अल्प समझी जाने लगी, इसलिए विषयाभ्यास का कार्यकाल संपूर्ण वर्ष का होने लगा। सत्र के मध्य लंबे अवकाश के लिए कोई प्रावधान नहीं था, फिर भी धार्मिक पर्वो पर अवकाश रहता था। प्रतिपदा एवं अष्टमी को अनध्याय होने के कारण साप्ताहिक अवकाश भी रहता था।

इन दोनों प्रणालियों को स्तरीकृत रूप से निम्न दृष्टि से देखा जा सकता है–

प्राचीन शिक्षण	प्रणाली वर्तमान शिक्षण प्रणाली
प्रथमा	निम्न प्राथमिक
पूर्व मध्यमा	उच्चतर प्राथमिक
उत्तर मध्यमा	निम्न माध्यमिक
	उच्चतर माध्यमिक

संस्कृत जैसा महत्वपूर्ण विषय जो कि सनातन संस्कृति को जानने का एक महत्वपूर्ण

स्रोत है, इसकी भारत के विविध राज्यों के पाठ्यक्रमों में स्थिति जानने के लिए अध्यन किया गया। इस अध्ययन में वर्तमान शिक्षण प्रणाली के अंतर्गत संस्कृत शिक्षण की राज्यवार स्थिति को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है।

केंद्र शासित प्रदेशों में संस्कृत

सात केंद्र शासित प्रदेशों में से तीन लक्षद्वीप, दमन दीव, गोवा जैसे प्रदेशों में तो संस्कृत विद्यालयों में न तो उच्चतर प्राथमिक स्तर पर और न ही माध्यमिक स्तर पर ही पढ़ाई जाती है।

दिल्ली में स्थिति सबसे अच्छी है। यहाँ संस्कृत उच्चतर प्राथमिक स्तर पर 137 ग्रामीण स्कूलों में तथा 1,778 शहरी विद्यालयों में पढ़ाई जाती है। जबकि माध्यमिक स्तर पर संस्कृत 102 ग्रामीण विद्यालयों में तथा 1,221 शहरी विद्यालयों में पढ़ाई जाती है।

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह के 73 ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों में उच्चतर प्राथमिक स्तर पर संस्कृत पढ़ाई जाती है जबकि 21 शहरी क्षेत्र के स्कूलों में संस्कृत का पठन पाठन होता है। यहाँ माध्यमिक स्तर पर स्कूलों में संस्कृत का पठन-पाठन नहीं होता है।

चंडीगढ़ में भी उच्चतर प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के 12-12 विद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है जबकि माध्यमिक स्तर पर 1 ग्रामीण विद्यालय एवं 11 शहरी विद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है।

दादर तथा नागर हवेली के उच्चतर प्राथमिक तथा माध्यमिक स्तर के दोनों क्षेत्रों के 1-1 विद्यालय में संस्कृत पढ़ाई जाती है।

केंद्र शासित प्रदेशों की स्थितियों पर दृष्टि डालने पर यह एक सुखद संयोग ही नजर आता है कि कम-से-कम पाँच केंद्र शासित प्रदेशों में संस्कृत पढ़ाई जा रही है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय की ओर से भी विभिन्न योजनाएँ संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए चलाई जाती हैं जिसकी सुखद परिणति भी दिखाई दे रही है।

उत्तर भारत में संस्कृत की स्थिति

हरियाणा के उच्च प्राथमिक स्तर के 4,430 ग्रामीण तथा 1,719 शहरी विद्यालयों तथा माध्यमिक स्तर के 2,946 ग्रामीण तथा 1259 शहरी विद्यालयों में संस्कृत शिक्षण होता है।

हिमाचल प्रदेश के उच्च प्राथमिक स्तर के 3,215 ग्रामीण तथा 313 शहरी तथा माध्यमिक स्तर के 1,584 ग्रामीण तथा 238 शहरी विद्यालयों में संस्कृत विषय के रूप पढ़ाई जाती है।

जम्मू कश्मीर तथा पंजाब में संस्कृत के अध्यापन की स्थिति शून्य है।

उत्तर प्रदेश में उच्च प्राथमिक स्तर के 23,995 ग्रामीण तथा 8,656 शहरी एवं माध्यमिक स्तर पर 5,671 ग्रामीण तथा 3,690 शहरी विद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है।

उत्तरांचल में उच्च प्राथमिक स्तर पर 3,944 ग्रामीण तथा 832 शहरी तथा माध्यमिक स्तर पर 1,242 ग्रामीण तथा 331 शहरी विद्यालयों में संस्कृत विषय के रूप में पढ़ाई जाती है।

उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि उत्तर भारत में पंजाब तथा जम्मू कश्मीर में संस्कृत

विभिन्न राज्यों में संस्कृत शिक्षण की स्थिति से संबंधित आँकडे निम्नवत् हैं-

राज्यों के नाम	*पढ़ाई जाने वाली भाषा का नाम*	*उच्च प्राथमिक स्तर*			*माध्यमिक स्तर*		
1. आंध्रपदेश	X	ग्रामीण	शहरी	कुल	ग्रामीण	शहरी	कुल
2. अरुणाचल प्रदेश	संस्कृत	398	88	486	0	0	0
3. असम	संस्कृत	17	19	36	193	76	269
4. बिहार	संस्कृत	4,326	675	5,001	682	205	887
5. छत्तीसगढ़	संस्कृत	6,142	1,526	7,668	1,874	827	2,701
6. गोवा	X						
7. गुजरात	X						
8. हरियाणा	संस्कृत	4,430	1,719	6,149	2,946	1,259	4,205
9. हिमाचल प्रदेश	संस्कृत	3,215	313	3,528	1,584	238	1,822
10. जम्मू और कश्मीर	X						
11. झारखण्ड	संस्कृत	2,908	865	3,773	576	401	977
12. कर्नाटक	X						
13. केरल	X						
14. मध्यप्रदेश	संस्कृत	21,129	9,227	30,356	3,989	3,637	7,626
15. महाराष्ट्र	X						
16. मणिपुर	X						
17. मेघालय	X						
18. मिजोरम	X						
19. नागालैंड	X						
20. ओडिशा	संस्कृत	100	68	168	3,766	411	4,177
21. पंजाब	X						
22. राजस्थान	संस्कृत	22,511	8,037	30,548	5,407	2,939	8,346
23. सिक्किम	X						
24. तमिलनाडु	X						
25. त्रिपुरा	संस्कृत	742	127	869	43	23	66
26. उत्तर प्रदेश	संस्कृत	23,995	8,656	32,651	5,671	3,690	9,361
27. उत्तरांचल	संस्कृत	3,944	832	4,776	1,242	331	1,573
28. पश्चिम बंगाल	संस्कृत	5,014	2,046	7,060	613	295	908
29. अंडमान निकोबार	संस्कृत	73	21	94	0	0	0
30. चंडीगढ़	संस्कृत	0	12	12	1	11	12
31. दादर और नागर हवेली	संस्कृत	0	1	1	1	1	2
32. दमन और दीव	X						
33. दिल्ली	संस्कृत	137	1,778	1,915	102	1,221	1,323
34. लक्षद्वीप	X						

विषय के रूप में कहीं नहीं पढ़ाई जाती है। उत्तर भारत के शेष प्रदेशों में उत्तर प्रदेश में सर्वाधिक विद्यालय हैं जहाँ संस्कृत पढ़ाई जाती है। लेकिन उत्तर प्रदेश में भी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों 9,361 की अपेक्षा उच्च प्राथमिक स्तर पर विद्यालयों की संख्या कहीं अधिक है, जहाँ संस्कृत पढ़ाई जाती है हरियाणा, हिमाचल प्रदेश उत्तर प्रदेश तथा उत्तरांचल में भी शहरों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों की संख्या अधिक है जिनमें संस्कृत पढ़ाई जाती है।

मध्य भारत में संस्कृत की स्थिति

छत्तीसगढ़ में उच्च प्राथमिक स्तर पर ग्रामीण क्षेत्र में 6,142 तथा शहरी में 1,526 विद्यालय तथा माध्यमिक स्तर पर 1,874 ग्रामीण तथा 827 शहरी विद्यालयों में संस्कृत विषय के रूप में पढ़ाई जाती है।

मध्यप्रदेश में उच्च प्राथमिक स्तर पर 21,129 ग्रामीण तथा 9,227 शहरी तथा माध्यमिक स्तर पर 3,989 ग्रामीण तथा 3,637 शहरी विद्यालयों में संस्कृत विषय पढ़ाया जाता है।

उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट है कि छत्तीसगढ़ तथा मध्यप्रदेश में भी उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक दोनों ही स्तरों में ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालय अधिक संख्या में हैं जहाँ संस्कृत पढ़ाई जाती है।

पश्चिम भारत में संस्कृत की स्थिति

गुजरात तथा महाराष्ट्र में संस्कृत शिक्षण की स्थिति शून्य है।

राजस्थान में उच्च प्राथमिक स्तर पर 22,511 ग्रामीण तथा 8,037 शहरी तथा माध्यमिक स्तर पर 5,407 ग्रामीण तथा 2,939 शहरी विद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है।

पूर्व भारत में संस्कृत की स्थिति

अरूणाचल प्रदेश में उच्च प्राथमिक स्तर पर 398 ग्रामीण तथा 88 शहरी विद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती हैं। माध्यमिक स्तर पर संस्कृत विषय नहीं है।

असम में उच्च प्राथमिक स्तर पर 17 ग्रामीण तथा 19 शहरी तथा माध्यमिक स्तर पर 193 ग्रामीण तथा 76 शहरी विद्यालयों में संस्कृत का अध्यापन होता है।

मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड तथा सिक्किम में संस्कृत शिक्षण की स्थिति शून्य है।

ओडिशा में उच्च प्राथमिक स्तर पर 5014 ग्रामीण तथा 2,046 शहरी एवं माध्यमिक स्तर पर 613 ग्रामीण तथा 295 शहरी विद्यालयों में संस्कृत विषय के रूप में पढ़ाई जाती है।

बिहार में उच्च प्राथमिक स्तर पर 4,326 ग्रामीण तथा 675 शहरी एवं माध्यमिक स्तर पर 682 ग्रामीण तथा 205 शहरी विद्यालयों में संस्कृत का अध्यापन होता है।

उपरोक्त आँकड़ों से स्पष्ट दृष्टिगत होता है कि पूर्व भारत में पाँच राज्यों में संस्कृत नहीं पढ़ाई जाती है। शेष राज्यों में भी उच्च प्राथमिक तथा माध्यमिक दोनों ही स्तरों पर ग्रामीण विद्यालय अधिक संख्या में हैं, जहाँ संस्कृत पढ़ाई जाती है।

दक्षिण भारत में संस्कृत की स्थिति

कर्नाटक, केरल और तमिलनाडु में किसी स्तर पर संस्कृत नहीं पढ़ाई जाती है।

आंध्र प्रदेश में उच्च प्राथमिक स्तर पर 398 ग्रामीण और 88 शहरी विद्यालयों में संस्कृत पढ़ाई जाती है लेकिन माध्यमिक स्तर पर संस्कृत बिल्कुल भी नहीं पढ़ाई जाती है।

निष्कर्षत: देखा जाए तो उत्तर एवं मध्यभारत में संस्कृत की स्थति अच्छी है, यहाँ अधिकांश प्रदेशों में संस्कृत पढ़ाई जाती है। एक महत्वपूर्ण तथ्य उभरकर सामने आया कि इन क्षेत्रों के ज़्यादा-से-ज़्यादा ग्रामीण स्कूलों में संस्कृत पढ़ायी जाती है। केंद्र एवं राज्य सरकारों को भी चाहिए कि सभी प्रदेशों में ग्रामीण के साथ-साथ शहरी क्षेत्रों के विद्यालयों में भी संस्कृत शिक्षण को बढ़ावा दें। इसके साथ ही संस्कृत विषय को रोजगारोन्मुख बनाकर इस विषय के प्रति छात्रों की रुचि को और जागृत किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पाण्डेय, रामशकल (2003), संस्कृत शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
2. मुसलगाँवकर, गजाननशास्त्री (1990) तर्क भाषा, चौखंभा सुरभारती, वाराणसी।
3. द्विवेदी, कपिलदेव (1965) संस्कृत-साहित्य का इतिहास, चौखंभा विद्याभवन, वाराणसी।